Research Journal of Language, Literature and Humanities ISSN 2348-6252
Vol. **4(1),** 1-3, January **(2017)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

गिरीश पंकज के साहित्य में गाधीवादी विचारधारा का प्रभाव

विजय कुमार
शासकीय विनायक यादव तामस्कर स्वशासी विज्ञान महा. दुर्ग, छतीसगढ़, भारत
vijaydeep916@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 8th November 2016, revised 25th December 2016, accepted 11th January 2017

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में गिरीश पंकज के साहित्य पर गाँधीवादी विचारधारा के प्रभावों का अवलोकन किया गया है। गाँधीवाद के प्रति लेखक के विचार एवं अपने साहित्य में स्थान के साथ-साथ जीवन में भी कितना महत्वपूर्ण स्थान है। यह जानने का प्रयास किया गया है कि गिरीश पंकज के साहित्य में सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, त्याग जैसे गाँधीवादी विचारधारा के लक्षण परिलक्षित होते हैं। इसी तारतम्य में विभीन्न पात्रों के वक्तव्यों एवं विवेचनों के माध्यम से वैचारिक एवं दार्शनिक पक्ष को रेखाँकित करने का संक्षिप्त प्रयास किया गया है।

शब्दकुंजिया: साहित्य, गाँधीवादी, विचारधारा

प्रस्तावना

गाँधी के विचारों को 'गाँधीवाद' या 'दर्शन' कहने में काफी मतभेद रहा है । स्वयं गाँधीजी ने भी अपने विचारों को किसी वाद के रुप में स्वीकार करने से परहेज करते रहे। किन्तु उनके सिध्दाँतों और जीवन में इतनी समानताएँ थीं कि विचारकों ने 'गाँधीवाद' की संज्ञा देना ही उचित समझा। गाँधीवाद केवल विचार या दर्शन मात्र नही है अपितु एक जीवन शैली भी है। कर्म और सिध्दाँत में समन्वय ही गाँधीजी के जीवन का सबसे बड़ा मूलमंत्र रहा, इसीलिए उन्हे संत और कर्मयोगी की उपाधि एक साथ मिली है। डाँ. एम.सी. जोशी कहते हैं "गाँधीजी की सारी दार्शनिक अनुभूतियाँ उनके कर्मयोग की ही देन हैं। उन्होने जो कुछ भी कहा उसको करके दिखाया।"[1]

गिरीश पंकज के साहित्य में गाँधीजी के विचारों एवं सिध्दाँतों का प्रभाव विभिन्न रचनाओं में देखने को मिलता है। जिसका संक्षिप्त विवेचन निम्न बिन्दुओं के तहत किया जा सकता हैः

खादी का समर्थन

खादी को आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशी का प्रतीक माना जाता है। खादी के प्रचार ने अपने साथ-साथ एक क्राँति का भी प्रादुर्भाव किया। खादी को धारण करना एक विचार को धारण करना है। गिरीश पंकज के साहित्य में साहित्य के प्रति पूर्ण सदभाव व्यक्त किया गया है। गिरीशजी स्वयं भी खादी के प्रति अटूट श्रध्दा रखते हैं और कहते हैः- "मैं इसे अपना परम सौभाग्य मानता हूँ कि मैंने एक ऐसे परिवार में जन्म लिया, गाँधी और खादी जैसे दो मंत्रों का अहर्निश पाठ होता था।.....पिताजी खादी कार्यकर्ता बने और ग्रामोद्योग तथा ग्रामोन्नति के प्रतीक खादी के प्रचार-प्रसार के लिए अब तक प्रतिबध्द हैं।"[2]

अहिंसावादी दृष्टिकोण

गाँधीजी सत्य और अहिंसा पर अटूट विश्वास रखते थे।गाँधीजी केवल हत्या और मारकाट को ही हिंसा नही मानते थे,वे तो व्यवहार और वाणी से भी किसी को कष्ट पहुँचाने को हिंसा मानते थे। गिरीशजी ने अपने साहित्य में इन्सानों के साथ-साथ पशु-पक्षियों के प्रति भी पूर्ण सहानुभूति व्यक्त की है। जीवों के प्रति दया और श्रध्दा व्यक्त की गयी है। लेखक तो व्यक्ति को आधुनिक होने के लिए भी हिंसा का त्याग करना अनिवार्य मानते हैः- "हिंसामुक्त समाज ही सच्चा आधनिक समाज है। अभी तो वह बहुत ही पिछड़ा हुआ है क्योंकि अभी भी मनुष्य का हिंसा से भयंकर लगाव है। लोकतांत्रिक सरकारें भी प्रतिरोध की आवाजों का दमन करने के लिए अंततः हिंसा का ही सहारा लेती हैं। लोकतांत्रिक सत्ताएँ भी निरंतर हिंसक होती जा रही हैं। हिंसा मनुष्य के बर्बर, असभ्य और पिछड़े होने की निशानी है।"[3]

मद्य निषेध

नशा व्यक्ति, परिवार और समाज सभी के लिए खतरनाक है।इंसान के तन और मन दोनो को नशा नाश की ओर ले जाता है। गाँधीजी मद्य निषेध को अनिवार्य मानते थे । गिरीश पंकज ने अपने साहित्य नें ऐसे घटनाक्रमों का चित्रण है, जिनमें नशे के खिलाफ सशक्त स्वर मुखर हुए हैं यथाः- "सुमेधा को जब इन बातों का पता चला तो उसे बहुत बुरा लगा। उसने तंकल्प ले लिया कि चैनपुर की शराब भट्ठी बंद होकर रहेगी। इसके लिए वह आंदोलन करेगी। वह शराब माफ़िया का डटकर सामना करेगी,चाहे जो हो । जान भी चली जाये, तो भी परवाह नही।"[4]

गाय का सम्मान

गाय के संबंध में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भी गाँधीजी कहा करते थे कि उनके लिए गाय का प्रश्न तो स्वराज्य के प्रश्न से भी महत्वपूर्ण है। गाँधीजी गाय के स्थान को माँ से भी ऊँचा मानते थे । 'यंग इंडिया' में गाँधीजी समय-समय पर गाय के संबंध में अपने विचार व्यक्त किया करते थे। 'हरिजन' पत्रिका में गाँधीजी लिखते हैं कि गाय हमारी सेवा आजीवन ही नही, अपितु मृत्यु के पश्चात् भी करती है।

गाय के संबंध में लेखक स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्हे सबसे ज्यादा प्रेरणा गाँधीजी के विचारों से ही ली है। संभवतः इसीलिए ही पंकज जी ने वेदों, पुराणों, रामायण, भगवतगीता, कुरान, जातक कथाओं का विस्तृत अध्ययन किया और एक उत्कृष्ठ रचना करने में सफल हुए। 'एक गाय की आत्मकथा' जो रचना स्वयं में एक शोधग्रंथ ही है। साथ ही लेखक ने गोकथा और गो-आरती, गो-वंदना भी लिखे हैं, जो कि गाय के संबंध में अपनी पुर्ण सहृदयता को व्यक्त करता है।

गिरीशजी पर गाँधीजी के इस विचार ने इतना प्रभावित किया है कि वे इसे एक आंदोलन का रुप देने का प्रयास अपनी रचनाओं में करते हैं और यह निरंतर जारी है। यथाः -"रामलीला मै सभा हुई ।.....गाय के सवाल पर हर धर्म के लोग एकत्र हो गये थे।देश के कोने-कोने से लोग एकत्र हुए थे। हिन्दू सन्त थे तो मुस्लिम समाज के लोगों की भी कमी नही थी। सभी का मकसद था देश में गो वध पर पूरी तरह रोक लगे।"[3]

नारी उत्थान

नारी उत्थान का विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है, प्राचीन काल से ही भारत में पुरुष प्रधान समाज होने के कारण नारी को आज भी समानता का पूर्ण दर्जा नही मिल सका है। समाज में प्रचलित विभिन्न रीति-रिवाजों के कारण नारी पर अत्याचार होते रहे और आज भी महिला-प्रताड़ना की हजारों घटनाएँ घटित हो रहे है। समान शिक्षा, समान आर्थिक अधिकार, समाज में समान दर्जा प्राप्त करना प्रत्येक नारी का अधिकार है, जिससे वे सदैव वंचित रही हैं। गाँधीजी नारी सशक्तिकरण को नारी शिक्षा से ही जोड़कर देखते थे। वे नारी व पुरुषों के संबंध में पूर्ण समानता के पक्षधर थे। "स्त्री के सारे अधिकार वही होने चाहिए जो पुरुषों को मिले हैं जिस प्रकार वे सामाजिक समानता की अधिकारिणी हैं, उसी प्रकार वे राजनैतिक समानता की भी अधिकारिणी हैं।"[1]

पंकजजी के साहित्य में अवश्य ही नारी संबंधी विचारों में गाँधीवाद का प्रभाव देखने को मिलता है, अपने साहित्य में नारी की प्राचीन व वर्तमान दशा पर गहरी संवेदना व्यक्त किया हैः- "औरत को कदम-कदम पर डराने के सौ हथकंडे हैं। औरत डर भी जाती है । कुछ हैं जो इस डर से निकल चुकी हैं लेकिन बंधन बड़ा पुराना है। टुटने में ज़रा वक्त लगेगा।"[5]

ग्राम-उत्थान

ग्रामोत्थान के संबंध में गाँधीजी के 'शक्ति के विकेन्द्रीकरण' संबंधी विचार उल्लेखनीय हैं। उनका मानना था कि कोई भी सरकार शक्ति-संपन्न होने के बाद हिंसक हो ही जाती है, भले ही वह लोकतंत्र ही क्यों न हो । इसीलिए उन्होने राज्यहीन समाज की कल्पना की करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कामना की थी। जिसका मूलाधार गाँधीजी 'शक्ति के विकेन्द्रीकरण' को मानते थे। इस संबंध में गाँधीजी के मत की व्याख्या करते हुए जे.पी.मसूद लिखते हैः- "अब हम पूर्ण अहिंसा पर आधारित एक आदर्श राज्यहीन-समाज की रुपरेखा पर दृष्टिपात कर सकते हैं। इसमें ग्रामों में बसे हुए समूह होंगे जिनमें गौरवपूर्ण तथा शांतिपूर्ण जीवन का आधार स्वेच्छापूर्ण सहयोग होगा। प्रत्येक ग्राम एक गणराज्य या पंचायत होगा जिसके पास प्रायः अपनी समस्त आवश्यकताओं यहाँ तक की अपनी रक्षा तक की पूर्ण सामर्थ्य होगी। इस अहिंसक समाज में जीवन का ढाँचा पिरामिड की तरह नही, वृत्त की तरह होगा और ग्राम-ग्राम वृत्त के लिए

मिटने को तैयार रहेगा और इस प्रकार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श की प्राप्ति होगी।"[1]

गिरीश पंकज के साहित्य में ग्राम-उत्थान संबंधी कई विवरण मिलते हैं जिनमें गाँव के विभिन्न परिस्थितियों पर चर्चा करते हुए ग्रामीण परिवेश को श्रेष्ठ बताने का प्रयास किया गया है:- "गाँव के खेत, बैलगाड़ी, अमराई, लंबे-चौड़े तालाब, दुर से नजर आने वाले विशाल पर्वत और पास ही बहती भरी-पूरी मासूम युवती की तरह मचलती, कल-कल करती हसदो नदी। ये सारे दृश्य मंत्र-मुग्ध कर देते थे सुमेधा को। सुमेधा ने स्वर्गलोक के बारे में पढ़ रखा था। अपने गाँव को देखने के बाद वह समझती थी की यही है स्वर्गलोक।"[4]

उपर्युक्त विवेचन में विवरणात्मक, विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक एवं उध्दरण शैली का प्रयोग करते हुए अवलोकन कर गिरीशजी के साहित्य को मूल्याँकित करने का अल्प प्रयास किया गया है। गिरीशजी ने गाँधीवाद के किन मुख्य बिन्दुओं को अपने साहित्य में शामिल किया है तथा उनके विचारों से प्रेरणा ग्रहण कर वर्तमान समाज में व्याप्त समस्याओं के संहार के लिए जो प्रयास किये हैं उसे ही रेखाँकित करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

सिध्दाँत और कर्म में समानता स्थापित करते हुए जीवन जीना ही सबसे बड़े चुनौतीपुर्ण कार्य को दर्शाता है। बड़े-बड़े साधु-संत, पादरी, मौलवी या उपदेशक तथा प्रवचनकर्त्ता बड़ी बात नही लेकिन लेकिन कर्मयोग को अपने जीवन में उतारकर कर्मयोगी बनना बड़ी बात है। बहुत से साहित्यकारों को देखा गया है कि आम लोगों, गरीबो और ग्राम्य-जीवन पर अत्यंत भावात्मक रचना करने में महारत हासिल कर लेते हैं, किंतु इन सबसे उनका कोई प्रत्यक्ष सरोकार नही होता है। गिरीश पंकजजी ने अपने व्यंग्य में जिन बुराइयों का खण्डन किया है, उन बुराइयों से वे अपने जीवन में भी दो-दो हाथ होते रहते हैं। अपने उपन्यासों के पात्रों में जिस दृढ़ चरित्र का परिचय देते हैं उस दृढ़ता को अपने जीवन में भी पूर्णतः धारण किये हैं। 'टाऊनहाल में नक्सली' जैसे उपन्यास में वे हिंसा और नक्सलवाद का विरोध करते हैं, तो स्वयं भी नक्सलियों से मुलाकात करने उनके गढ़ बस्तर में जाने का साहस दिखाते हैं। 'माफ़िया' नामक उपन्यास के नायक का अपने आदर्श और सिध्दाँतों की रक्षा करने के लिए नौकरी को भी ठोकर मार देना लेखक के जीवन में भी घटित हो चुका है और किसी भी परिस्थिती में समझौता न करने वाले 'मीडियाय नमः' के सरोजकुमार द्वारा साहित्य सेवा और पत्रकारिता को मिशन मानकर सेवा करना लेखक ने अपने जीवन में भी उतारा है । सत्य और अहिंसा का 'एक गाय की आत्मकथा' में मद्यपान के निषेध का, 'पाँलीवुड की अप्सरा' में नारी सशक्तिकरण का, 'गाँव की बहू' में ग्राम्य-जीवन का, पाँलीवुड की अप्सरा में सुन्दर विवेचना एवं विश्लेषण किया गया है। अंततः यह कहना अधिक श्रेष्ठ होगा कि गाँधीवाद का पूरा-पूरा प्रभाव गिरीश पंकजजी के साहित्य और जीवन दोनो पर बराबर परिलक्षित होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जोशी एम.सी. (2006). गाँधी, नेहरु, टैगोर तथा आम्बेदकर, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण.
2. पंकज गिरीश (2015). मेरे जीवन के अनुभव, डायमंड बुक्स, नई दिल्ली.
3. पंकज गिरीश (2012) एक गाय की आत्मकथा, सर्वप्रिय प्रकाशन, कश्मिरी गेट, दिल्ली.
4. पंकज गिरीश (2008). पाँलीवुड की अप्सरा, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली.
5. पंकज गिरीश (2006). मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ, डायमंड बुक्स, नई दिल्ली.